RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-05
May-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

"राम की शक्ति पूजा" में नाटकीयता

दया शंकर कुमार

यू.जी.सी.–नेट / जे.आर.एफ.–2014

नाटक सिर्फ एक विधा नहीं है, वह अभिव्यक्ति की एक शैली भी है। महान रचनाकार चाहे कविता लिखे, चाहे उपन्यास या कहानी– उसमें नाटकीयता के तत्व का प्रयोग आवश्य करता है क्योंकि नाटकीयता शामिल होते ही रचना की प्रभाव क्षमता बहुगुणित हो जाती है। निराला व मुक्तिबोध कविता में नाटकीय तत्वों का प्रयोग करने की दृष्टि से महानतम कवि हैं। निराला की जिस कविता में यह तत्व सघनतम रूप में दिखाई देता है, वह 'राम की शक्ति पूजा' ही है।

कविता में नाटकीय तत्वों का समावेश मुख्यतः दो स्तरों पर होता है – कथा की संरचना के स्तर पर तथा नाट्य युक्तियों के स्तर पर। संरचना के स्तर पर नाटकीयता का अर्थ है कि कविता का कथानक विरोधी तत्वों की टकराहट के माध्यम से विकसित हो, जिसे पाश्चात्य नाट्य चिंतन में 'द्वन्द्व' या संघर्ष कहा गया है। कथानक की गति जितनी अधिक वक्र होगी, कविता उतनी ही नाटकीय होगी। नाट्य युक्तियों के स्तर पर नाटकीयता का अथ है कि जिस प्रकार नाटक में प्रकाश–योजना, दृश्य–योजना, ध्वनि–योजना, वेशभूषा तथाा संवाद–शैली इत्यादि का प्रयोग किया जाता है, वैसे ही कविता में भी किया जाए। 'राम की शक्ति पूजा' दोनों ही स्तरों पर चरम नाटकीयता से सम्पन्न कविता है।

1. कथानक के स्तर पर नाटकीयता :–

क) प्रकाश व अंधेरे का द्वन्द्व – इस कविता की मूल संरचना द्वन्द्वात्मक है और इसी द्वन्द्व के कारण कविता की भाव–योजना में नाटकीयता अन्तर्निहित है। यह द्वन्द्व मुख्यतः दो प्रकार से दिखता है। मूर्त स्तर पर द्वन्द्व अंधेरे व प्रकाश में है। कवित की शुरूआत 'रवि हुआ अस्त' से हुई है और यह अंधेरा घना होते–होते 'अमानिशा' के स्तर तक पहुँचता है। पूरी कविता में प्रकाश का उल्लेख सिर्फ दो बार हुआ है। पहली बार अमानिशा से टकराता हुआ प्रकाश 'केवल जलती मशाल' का है; दूसरी बार प्रकाश तब आया है जब राम साधना के लिएतत्पर होते हैं – 'निशि हुई विगत, नभ के ललाट पर प्रथम किरण फूटी'। इस प्रकार, इस कविता में एक ओर जहाँ गहरा अंधकार है वहीं दूसरी ओर क्षीण प्रकाश। इनके द्वन्द्व से अद्भुत नाटकीयता पैदा हुई है। ध्यातव्य है कि दिन के प्रकास की कविताएँ तो बहुतों ने लिखी हैं, किन्तु कविता में रात के अंधेरे से टकराने की क्षमता 'निराला' व 'मुक्तिबोध जैसे जुझारू व बीहड़ कवियों में ही है। 'गहन है यह अंधियारा' यूँ भी निराला के काव्य का बीज–भाव माना जाता है।

ख) भावों के स्तर पर नाटकीयता – 'राम की शक्ति पूजा' में भावों के स्तर पर भी अद्भूत नाटकीयता है। पूरी कविता परस्पर विरोधी भावों के क्रमिक उत्थान–पतन पर ही आधारित है।सबसे पहले राम पराजित मनःस्थिति में हैं– 'स्थिर राघवेन्द्र को हिता रहा फिर–फिर संशय'। इसके तुरंत बाद 'ऐसे क्षण जैसे अंधकार घन में विद्युत' की भंति सीता की जनक–वाटिका का स्मृति जागती है और राम के मन में 'फिर विश्व विजय भावना हृदय में आई भर' की स्थिति उत्पन्न होती है। इसके तुरंत बाद भीमा की मूर्ति याद आते ही 'लख शंकाकुल हो गए अतुल बल शेष शयन' और इसका परिणाम है कि उनके 'भावित नयनों से सजल गिरे दो मुक्तादल।' फिर हनुमान का ऊर्ध्वगमन प्रचंड आशा जगाता है किन्तु पार्वती के अंजना रूप के समक्ष वे भी दीन हो जाते हैं। विभीषण के ओजपूर्ण उद्बोधन से कविता के तेवर आक्रमक होते हैं, किन्तु राम का जबाब कि 'मित्रवर, विजय होगी न समर' तथा उसका कारण कि 'अन्याय जिधर है उधर शक्ति' व्यक्त होने के साथ ही कविता निराशा में डूब जाती है। जाम्बवन्त का सुझााव कि आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर कविता में फिर जान फूँक देता है और पूजा के अंतिम पुष्प के समर्पण तक यही आशा और ओज निरंतर बना रहता है। किन्तु तभी द्विपहर रात्रि साकार हुई दुर्गा छिपकर, हँस, उठा ले गई पूजा का प्रिय इंदीवर के प्रसंग के साथ ही कविता नाटकीय तरीक से निराशा में डूब जाती है क्योंकि राम की स्थिति यह है कि 'आसन छोड़ना असिद्धि' भर गये नयनद्वय। यहाँ कविता अपने ट्रेजिक अंत पर पहुँच गई है और उसी की अभिव्यक्ति है – 'धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध'। किन्तु, यही फिर आशा जागती है क्योकि 'वह एक और मन रहा राम का जो न थका' अचानक जाग उठती है। राम को अचानक स्मृति आती है कि मेरी आँखों के रूप में दो पुष्प अभी भी शेष है। वे अत्यंत उत्साह के साथ एक आँख चढ़ाने को उद्धत हो जाते है और जिस क्षण बंध गया दृग बेधने का दृढ़ निश्चय,काँपा ब्रह्माण्ड हुआ देवी ुका त्वरित उदय। देवी के आगमन के साथ ही कविता अपने सुखांत की ओर प्रवृत्त होता है :–

"होगी जय, होगी जय,हे पुरूषोत्तम नवीन,
कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।"[1]

RRIJM 2015, All Rights Reserved

इससे यह स्पष्ट होता है कि कविता की पूण संरचना भावों के द्वन्द्व पर ही टिकी है। परस्पर विरोधी भावों के तीव्र उत्थान व पतन ने कविता पढ़ने की प्रक्रिया को नाटक देखने के समान रोचक बना दिया है। भावों के स्तर पर एक और द्वन्द्व है। यह द्वन्द्व भावों तथा उनकी अभिव्यक्ति में है। इसमें एक ओर रावण तथा हनुमान हैं, जो भावों की अभिव्यक्ति चरम स्तर पर करते है। रावण भी अट्टहास करता है और हनुमान भी। इसके विपरीत, राम तीव्र भावनाओं की अत्यंत संयमित अभिव्यक्ति करते हैं। उनका औदात्य इसी नाटकीयता में छिपा है जो तीव्र भावनाओं व कठोर संयम के आंतरिक द्वन्द्व से निर्मित हुई है। जिस क्षण उनके मन में पूरा विश्व जीत लेने का उद्दाम आत्मविश्वास है, तब भी उनके होठों पर सिर्फ हल्की सी मुस्कुराहट हैः–

"फूटी स्मिति सीता ध्यानलीन राम के अधर,
फिर विश्व विजय भावना हृदय में आई भर।"[2]

दूसरी ओर जब जीवन की सारी नैतिकता व सारा संघर्ष पराजय के बिन्दु पर खत्म होता है और जिस स्थिति में कोई भी साधारण मनुष्य पूर्णतः टूट सकता है, वहाँ भी राम की अभिव्यक्ति निःशब्द रूदन की है। यह स्थिति कविता में तीन बार आई किन्तु तीनों ही बार राम की अभिव्यक्ति अत्यंत संयमित है– "भावित नयनों से सजल गिरे दो मुक्ताजल"

2. अन्य युक्तियों के स्तर पर नाटकीयताः–

क) आकस्मिकता :– यह नाटकीयता की सबसे प्रमुख युक्ति है। यह कथानक में संघर्ष को चरम बिंदु तक ले जाना हो तो यह जरूरी होता है कि कुछ घटनाएँ अचानक घटित हों। आकस्मिकता कम हो तो नाटकीय तनाव कम हो जाता है, जबकि आकस्मिकता आवश्यकता से अधिक हो तो नाटक यथार्थ से पलायन कर बैठता है। इस कविता में बार–बार इस युक्ति का प्रयोग हुआ है। उदाहरण के किए जब राम घोर निराशा में डूबे हैं, अचानक तभी सीता उनकी स्मृति में आती हैंः–

"ऐसे क्षण अंधकार धन में जैसे विद्युत,
जागी पृथ्वी तनया कुमारिका छवि"[3]

इसी प्रकार, जब वे विश्व विजय भावना से भरे हैं, तभी अचानक भीमा की मूर्ति याद आती है, हनुमान जैसे ही शक्ति को निगलने वाले है, तभी अचानक अंजना रूप का उदय होता है। जब पूजा का अंतिम पुष्प रह जाता है, तभी देवी आती हैं और उसे ले जाती हैं। जब राम आत्मधिक्कार से भरते हैं, तभी अचानक उनका एक और जागता है एवं माँ के कथन की स्मृति आती है। अंत में, जैसे ही राम द्वारा आँख निकालने का निश्चय दृढ़ होता है, तभी अचानक देवी का त्वरित उदय होता हैः–

"जिस क्षण बंध गया दृगबेधने का दृढ़ निश्चय,
काँपा ब्रह्माण्ड हुआ देवी का त्वरित उदय"[4]

ख) दृश्य योजना :– नाटक में यह अधिक महत्व होता है। 'राम की शक्ति पूजा' नाटक के कथाानक की तरह कुछ निश्चित दृश्यों में बंधी है। पहला दृश्य युद्ध का है, दूसरा लौटती हुई सेना का, तीसरा सानुसभा का, चौथा हनुमान के ऊर्ध्वगमन का तथा पाँचवा राम की साधना का। इन पाँच दृश्य–खंडों में पूरी कविता का नाट्य रूपांतरण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त कई ऐसे कथन प्रयुक्त हुए हैं, जिनमें किसी दृश्य के संकेत हैं। यूँ लगता है कि 'निराला' यह संकेत पाठक को ही कर रहा है, जैसे : –

"देखो, बन्धुवर, सामने स्थिर जो यह भूधर।"[5]

ग) चरित्रों की स्थितियों का नाटकीय वर्णन :– किसी भी नाटक में चरित्रों की स्थिति से ही नाटकीयता उत्पन्न होता है। निराला ने विभिन्न चरित्रों की बाह्य चेष्टाओं का स्पष्ट उल्लेख कई बार किया है। उदाहरणार्थ :–

"देखते सकल, तन पुलकित होता बार–बार।"[6]

इसी प्रकार, जब राम विभीषण के लम्बे कथन के बाद रो पड़े हैं तो अगली छः पंक्तियों में लक्ष्मण, हनुमान, जाम्बवंत, सुग्रीव व विभीषण की मानसिक व बाह्य प्रतिक्रियाएँ बताई गई हैं, जो बेहद नाटकीय बन पड़ी हैं।

घ) प्रकाश व्यवस्था :– नाटक में आवश्यक होता है कि जिस घटना या चरित्र पर ध्यान दिया जाए, प्रकाश उसी पर केन्द्रित रहे। चूँकि यह कविता है, नाटक नहीं, इसलिए ऐसे संकेत व्यक्त रूप में नहीं दिए गए हैं। किन्तु, कविता के बिम्ब ग्रहण की प्रक्रिया में प्रकाश योजना महसूस होती है। यह अँधेरे का नाटक है, इसलिए प्रकाश बेहद 'फोकस्ड' तरीके से प्रयुक्त हुआ है। मुख्यतः यह राम पर केन्द्रित है, किन्तु बीच–बीच में हनुमान, लक्ष्मण, जाम्बवंत पर स्थनान्तरित होता रहता है।

ड़) संवाद योजना :– यदि नाटक एकालाप या भाषण शैली पर टिका हो तो नाटकीय तनाव शिथिल हो जाता है। दूसरी ओर, वार्तालाप व संवाद शैली से तनाव तो सघन होता ही है, कथानक व दर्शक में सीधा संबंध भी बना रहता है। 'राम की शक्ति पूजा' में कई संवाद हैं, जैसे विभीषण का संवाद, अंजना का संवाद, शिव–शक्ति का संवाद, जाम्बवंत का संवाद, राम का संवाद व अंत में दुर्गा का राम के प्रति संवाद।

च) पूर्वदीप्ति :– नाटक या फिल्म में 'फ्लैश बैक' या 'पूर्वदीप्ति' का प्रयोग भी अत्यंत उपयोगी माना जाता है। अतीत या

कल्पना के चित्रों की प्रस्तुति सीधे तौर पर करना संभव नहीं होता। यदि अभिनेता बोलकर अपनी स्मृति के तथ्य बताए तो नाटकीय तनाव का क्षरण हो जाता है। पूर्वदीप्ति शैली अतीत को प्रत्यक्ष बनाने की शैली है, जो ऐसे प्रसंगों में बेहद कारगर सिद्ध होती है। 'राम की शक्ति पूजा' में राम को सीता की स्मृति आने के समय इसी शैली का प्रयोग हुआ है :–

"देखते हुए निष्पलक याद आया उपवन
विदेह का प्रथम स्नेह का, लतांतराल मिलन।"[7]

छ) ध्वनि एवं वेशभूषा संकेतः– 'राम की शक्ति पूजा' में इसका भी ध्यान दिया गया है। युद्ध में जब हनुमान हुंकार भरते हैं तो उसे 'क्रुद्ध कपि विषम हूह' कहकर बताया गया है। राक्षसों के युद्ध से लौटते समय तेज शोर के कारण 'बिंध माहल्लास से बार–बार आकाश विकल' हो गया है तो राम की सेना एकदम मौन है। फिर राम की चिंता व निराशा को समुद्र के गर्जन से मूर्त बनाया गया है :–

"अप्रतिहत गरज रहा पीछे अंबुधि विशाल।"[8]

ज) आहार्य :– कम मात्रा में ही सही, किन्तु कविता में आहार्य अनुभवों की योजना भी दिखाई पड़ती है। निराशाग्रस्त राम की दृढ़ जटायें खुलकर बिखरी हुई :–

"दृढ़ जटा मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलट से खुल,
फैला पृष्ठ पर बाहुओं पर वक्ष पर विपुल।"[9]

अंततः कहा जा सकता है कि 'राम की शक्ति पूजा' कविता के ढाँचे में एक अद्भुत नाटकीय सिद्धि है। कवित के ढाँचे में नाटक की उपस्थिति दो विधओं के अवैध मिश्रण का दोष नहीं है। जब कविता नाटकीयता से युक्त हो जाती है, तो वह पाठक के ऐन्द्रिक बोध का विषय बनती है और उसका प्रभाव अत्यंत सघन हो जाता है। आधुनिक हिन्दी में इस कवित का नाटकीयता की तुलना सिर्फ मुक्तिबोध की कवित 'अंधेरे में' से ही हो सकती है। यह भूलना नहीं चाहिए कि यदि 'राम की शक्ति पूजा' आधुनिक काल की सफलतम कविताओं में से एक है, तो उसका एक बड़ा कारण उसमें विद्यमान नाटकीयता है।

संदर्भ :–

1.राग–विराग/डॉ रामविलास शर्मा/राम की शक्ति पूजा/सन् 1923
2. –वही–
3. –वही–
4. –वही–
5. –वही–
6. –वही–
7. –वही–
8. –वही–
9. –वही–

RRIJM 2015, All Rights Reserved